जीवन विघा राष्ट्रीय सम्मेलन – रूप रेखा

भूमिका

२०११ के इंदौर सम्मेलन में आगामी सम्मेलनों के रूप रेखा को लेकर एक बैठिक हुई | इसमें निर्णय हुआ की सम्मेलन एक, अथ वा कुछ व्यक्तियों के निर्णय से निश्चित होने के जगह सामूहिक रूप से तय किया जाये | उसके बाद लगातार प्रति वर्ष सम्मेलन के पहले १०–१२ लोगों के साथ कांफ्रेंस कॉल तथा बैठक किया गया, जिसमे कार्यक्रम तथा वक्ताओं के नाम सर्व सम्मति से लिए गए | इसमें, तथा अनौपचारिक चर्चाओं में जो बातें हुई, उन्हें यहाँ लिपिबद्ध किया जा रहा है | * यह रूप रेखा उस समय से हुए अनेक सम्मेलन सम्बंधित गोष्ठियों से संकलित किया गया है /इसमें सारे केन्द्रों/ समूहों से व्यक्तियों के **सुझाव** समाया है /इसे प्रति वर्ष समृद्ध किया जा सकता है/

वैचारिक कार्यक्रम

1. सम्मेलन समिति का गठन

a. प्रति वर्ष सम्मेलन की रूप रेखा को तय करने हेतु 8 व्यक्ति जिम्मेदार होंगे, जिनका चयन देश भर के अध्ययन केन्द्रों एवं अन्य स्थानों से **"प्रतिनिधि" विधि** से किया जाये | (तालिका संलग्न है)

b. इसमें: १ प्रतिनिधि पूर्व वर्ष के सम्मेलन स्थल से, १ आगामी सम्मेलन स्थल से, २ 'अध्ययन केन्द्रों' से, १ या २ 'परिचय केन्द्रों' से एवं २ या ३ 'समूहों' से किये जायें | कुल ८ व्यक्ति होंगे |

c. इसमें २ ऐसे व्यक्ति हों जिन्होंने पूर्व सम्मेलन का प्रबंधन किये हैं, एवं २ नए/ युवा साथी रहेंगे | कम से कम एक नारी सदस्य रहें |

d. **सम्मेलन समिति २ वर्षों के लिए स्थाई रहेगी** | प्रति – २ वर्ष समिति से 2 व्यक्ति बदलेंगे, एवं किसी नए स्थान से 2 जुड़ेंगे | इसका निर्णय आगामी सम्मेलन स्थल के आयोजक स्वयं लेंगे | प्रयास किया जाये की कोई भी व्यक्ति 3 से अधिक वर्ष समिती में न रहें | अपेक्षा है की कुछ वर्षों में इस विधी से सभी केन्द्रों / समूहूँ से प्रतिनिधि सम्मेलन रूप रेखा में भागीदारी कर सकेंगे |

e. **युवा समिति:** युवा (15–21 वर्ष आयू) जिनके माता पिता इस विचार से बहुत साल से जुड़े है, तथा जिनका जीना इस विचार से प्रभावित है, उनका एक युवा समिति बनाएं | इनका 1-2 mentors (मार्गदर्शक मंडल) बनाये। इस समिति का मुख्य जिम्मेदारी होगा कि सम्मेलन के संदर्भ में इस वर्ग के विचार सामने आये, तथा सम्मेलन को अधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए कार्य करे । इसकी पद्धति भी वो लोग निर्धारित करे तथा मुख्य समिति के सुझाव लेकर उसको क्रियान्वित करे।

2. सम्मेलन मार्गदर्शन समिति (स्थाई)

सम्मेलन के सुचारू रूप से चलन हेतु एक स्थाई मार्गदर्शन समिति का गठन किया गया है, जो सम्लेना समिति द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम का मूल्यांकन करेगा एवं सुझाव देगा | यह समिति मध्यस्थ दर्शन के अध्ययन केन्द्रों के वर्तमान के प्रभारियों के रूप में पहचाना गया है |

1. अछोटी – योगेश शास्त्री
2. हापुड़ – सोम त्यागी
3. इंदौर – अजय दायमा
4. अमरकंटक – साधन भट्टाचार्य
5. कानपुर– गणेश बागडिया
6. बिजनोर – रणसिंह आर्य

सम्मेलन के रूप–रखा में कोई भी बड़े स्तर के परिवर्तन (एक से अधिक सत्रों का रूप रेखा बदलने) के लिए मार्गदर्शन समिति का सहमति आवश्यक है |

3. मुख्य कार्यक्रम निर्धारण एवं प्रबंधन: कार्यक्रम प्रबंधक) Program Manager (की जिम्मेदारियां

1. सम्मेलन का मुख्य प्रसंग (Main Theme) एवं उप-वस्तु (Secondary Theme) सम्मेलन आयोजक स्थान स्वयं तय करें | इसे आगे ले जाने के लिए एक **'कार्यक्रम प्रबंधक' (Program Manager)** का चयन करें जो सम्पूर्ण सम्मेलन कार्यक्रम का प्रारूप तैयार करेंगे
2. इस दस्तावेज में दिए सभी मुद्दों पर ध्यान देंगे, क्रियान्वित करेंगे एवं अगले सम्मेलन समिति तक इसे हस्तांतरित करेंगे | The program manager is responsible for executing all steps/activities in this document until the end of the sammelan and its handover to the next organizing committee.

3. मंच चर्चा की विषय वस्तु/ रूप रेखा तैयार करें (चर्चा वस्तु की तालिका संलग्न है)
4. गोष्ठियों के विषय वस्तु तय करें - (चर्चा वस्तु की तालिका संलग्न है)
5. 3-4 माह पूर्व ही इस मुद्दे (Theme) के लिए DRAFT सम्मेलन रूप रेखा (Agenda) तय करें एवं सम्मेलन समिति के 8 सदस्यों को भेजें, उनके सुझाव एवं सहमति प्राप्त करें |
6. कार्यक्रम रूप रेखा (Agenda) को तय करने के पश्च्यात सम्मेलन के 3 माह पहले ही "स्थाई मार्गदर्शन समिति" को कार्यक्रम रूप रेखा भेजें एवं उनका सहमति एवं सुझाव प्राप्त करें
7. इसके पश्च्यात 2 माह पूर्व ही देश भर में सारे साथियों को इन्टरनेट के माध्यम से कार्यक्रम सूचना भेजा जाय एवं सुझाव लिए जायें | सुचना प्रसारण के लिए sms, what's-app एवं website का प्रयोग किया जाये

3. वक्ताओं का चयन एवं पूर्व तय्यारी:

a. सम्मेलन समिति (प्रबंधक सहित) अब मंच चर्चा के सत्रों के अध्यक्ष का चयन करें तथा वक्ताओं के चयन हेतु सभी केन्द्रों तथा स्थानों से सम्पर्क करें एवं वक्ताओं के नाम हेतु **प्रतिनिधि विधि** से सुझाव प्राप्त करें | इस सूची के आधार पर वक्ताओं का नाम विभिन्न सत्रों के लिए तय करें एवं आवश्यकता होने पर अपने ओर से और नाम जोड़ लें | (इस विधि से नवीन वक्ताओं का जुड़ना संभव है, अन्था समिति के स्मरण में जो नाम हैं, वही जुड़ते हैं)

- यथा संभव कोई भी व्यक्ति एक से अधिक बार मंच से प्रस्तुत न हो, ताकी अधिक से अधिक साथियों को व्यक्त होने का अवसर प्राप्त हो |

b. **जिम्मेदार व्यक्तियों को तय करना**

i. मंच संचालन हेतु एक नर–नारी का चयन, यह प्रत्येक दिवस भी ऐसा एक नया जोड़ी हो सकते हैं
ii. गोष्ठियों के लिए संचालक तय करें
iii. रिपोर्टिंग: प्रति दिन के कार्यक्रम का एक छोटा १ पृष्ठ का सारांश तैयार करने जिम्मेदार व्यक्तियों का चयन – जो सम्मेलन के अंत में वेबसाइट में डाला जा सके

c. एवं मंच संचालकों की जिम्मेदारियां: (कार्यक्रम प्रबंधक इसमें साथ देंगे)

- प्रत्येक सत्र के अध्यक्ष के साथ उनके सत्र के विषय वस्तु, वक्ता, एवं उपलब्ध समय १०–१५ दिन पूर्व ही उन्हें सूचित करें ताकी वे सोचकर. अथवा लिखित तय्यारी के साथ मंच से बोंले | प्रत्येक सत्र के अध्यक्ष को अपने अपने वक्ताओं से पूर्व परामर्श करने कहें
- सम्मेलन के पूर्व ही हर स्थान /केंद्र की योजना सम्बन्धी प्रस्तुति को एक निश्चित रूप–रेखा मे

मंगवाना (फॉर्मेट संलग्न है)

4. क्रियान्वयन

i. ८ लोगों की समिति सम्मेलन के पूर्व ही कार्य–योजना में भागीदार हों, एवं १–२ दिन पूर्व ही सम्मेलन स्थल पहुंचे एवं व्यवस्था में सुझाव दें, भागीदारी करें |

ii. **कार्यक्रम प्रबंधक** सम्मेलन समापन के पश्च्यात इस DOCUMENT को UPDATE करें एवं आगामी सम्मलेन स्थल को भेज दें | इसमें आपके सुझाव, learnings, प्रतिभागी प्रतिसाद (feedback) को आवश्य दें (संलग्न है)

- एक छोटी सा 5–6 page report तैयार करें | इसे printed अथवा electronic distribution के लिए web-team से संपर्क करें – देश भर में distribution हेतु | इसमें सम्मेलन के कुछ photo रहें

भौतिक–रासायनिक कार्यक्रम, सहभागिता एवं आर्थिक पक्ष

- स्थानीय आयोजक समिति ठहरने, भोजन, यातायात, मंच इत्यादी व्यवस्था स्वयं करेंगे | यथा आवश्यक पूर्व अनुभवी सम्मलेन स्थलियों से इसके उपयुक्त भौतिक एवं बौद्धिक सहायता प्राप्त कर सकते हैं |
- इसमें निम्न 6 क्षेत्रों के लिए एक–एक प्रबंधक निश्चित करें: Accomodation, Transport, Kitchen, Food Serving & Cleaning, Registrations (with First Aid) , Media & Finance.

{**निम्न दो मुद्दों को सभी स्थान/केंद्र/परिवार समूहों में चर्चा कर सहमति प्राप्त कर लें** |}

सम्मेलन जन संख्या:

- सम्मेलन में सत्रों की एवं गोष्ठियों के सार्थकता, तथा व्यवस्था में सुगमता को ध्यान में रखते सम्मेलन में अधिकाधिक **४०० लोगों का होना** उचित है | इसमें १०० स्थानीय लोग एवं **३०० देश भर से हो सकते हैं** | इस हेतु:
  - सम्मेलन पंजीकरण खुला न होकर प्रत्येक स्थान/केंद्र से एक व्यक्ति का सम्पर्क दें | उस राष्ट्र के सभी व्यक्ति उसी व्यक्ति/स्थान से पंजीकरण हेतु सम्पर्क करें एवं यह प्रतिनिधि विधि से हो | सम्मेलन के पश्चात वे लोग अपने अपने स्थान में सम्मेलन की पस्तुति दे दें | साथ में विडियो रेकोर्डिंग भी प्राप्त हो जायेगा | इसमें इस बात पर ध्यान दें की नए परिचित एवं नए अध्ययनशील लोगों/परिवारों को अधिकाधिक अवसर मिले | प्रस्तावित प्रितिनिधि संख्या निम्नानुसार है:

छत्तीसगढ़: 80	दिल्ली, NCR, देहरादून: 50
ओडिशा, झारखण्ड, बिहार एवं म.प्र: 30	राजस्थान एवं गुजरात: 50
उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड: 50	महाराष्ट्र: 30
बैंगलोर एवं दक्षिण भारत: 10	

अर्थ व्यवस्था:

- सम्मेलनों में बढ़ते खर्च (10–12 लाख) को ध्यान में रखते यह सुझाव आया है की जीवन विद्या सम्मलेन भी स्वायत्त हो जाए | अर्थात, चंद लोगों से मुद्रा योगदान लेने से अच्छा यथा सम्भव प्रत्येक प्रतिभागी अपने भोजन एवं ठहरने का खर्च स्वयं वहन करें | **इसमें प्रत्येक व्यक्ति से 1200 रुपये सहयोग** राशी पंजीकरण के समय ही बता दें | यह राशी

स्वेच्छिक है | १० वर्ष के कम आयू के बच्चों का कोई राशी नहीं रहेगा | इससे अपेक्षा है की सम्मेलन का लगभग 50% से 60% व्यय अंशदान से हो जावे | इससे सम्मेलन में भाग लेने के प्रति जिम्मेदारी भी बढेगा | जो लोग इतना नहीं दें सकते हैं, अथवा अधिक देना चाहते हैं, वो सम्मेलन स्थल में ही पंजीकरण डेस्क में दे सकते हैं |

सम्मेलन समिति हेतु प्रतिनिधि चयन

- उपरोक्त नीति का क्रम २०१२ अछोटी सम्मेलन से जारी है |
- समिति के चयन हेतु प्रतिनिधि निम्न स्थानों से किये जायें – यह स्थान स्वयं अपने परिवार समूहों में चर्चा कर प्रतिनिधि का चयन करेंगे एवं सम्मेलन समिति को भेजेंगे:
    - **अध्ययन केंद्र** (जहाँ पुस्तकों सहित मध्यस्थ दर्शन अध्ययन शिविर/गोष्ठी किये जा रहे हैं):
        - अछोटी, बिजनोर, कानपुर, इंदौर, अमरकंटक/मानव तीर्थ, हापुड़
    - **परिचय केंद्र** (जहाँ जीवन विद्या शिविर हेतु एकान्तिक स्थान उपलब्ध है):
        - बुलढाना
    - **समूह** (जहाँ अध्ययनशील/ परिचित साथी कुछ मात्रा में उपस्थित हैं):
        - पुणे, हैदराबाद, यवतमाल, गुजरात, बंगलोर, वाराणसी, दिल्ली, बरगढ़, पंजाब, सरदारशहर, बेमेतरा...

मात्र प्रति २ वर्ष, २ सदस्य बदलेंगे::

स्थान	२०१२ अचोटी	2013 बिजनोर	2014 अमरकंटक	2015 बुलढाना	2016 स.शहर	2017 वाराणसी	२०१८ गुजरात	२०१९ अमरकंटक
कार्यक्रम प्रबंधक	**संकेत**	**अनुराग**	**श्रीराम**	**योगेश शास्त्री**	**अजय दाय मा**	**सुरेन्द्र पाल**	**पाठक**	**अंकित**
अध्ययन केंद्र – २ का चयन								
अछोटी–हिंगना	सुवर्णा	सोम		योगेश, सोम			मंजीत	मंजीत
बिजनोर			रणसिंह	रणसिंह			रणसिंह	रणसिंह
कानपुर		श्याम	गणेश ब.	गणेश ब.		अभिषेक व निशा		
इंदौर	अजय	अजय					किशन	किशन
अमरकंटक /मानव तीर्थ	श्रीराम	श्रीराम	साधन		सुशिल सिंह		सुशिल	अंकित/ मृदु
हापुड़								श्रवण शुक्ल
परिचय केंद्र : १ या २ का चयन								
बरगढ़					गोपाल			
बुलढाना				आशुतोष	आशुतोष		सचिन	सचिन
समूह: २या ३ का चयन								
अमरोहा / वाराणसी		अरुण, गोनू			अरुण	संगल	संगल	
रायपुर					अनीता	रणजीत	अनीता	
सरदारशहर					हिमांशु	हिमांशु	हिमांशु	
पुणे				महेश	अपूर्वा	वंदना	रुपाली	रुपाली
हैदराबाद						प्रदीप	प्रदीप	
बेमेतरा		गणेश व.	गणेश व.				गणेश	
यवतमाल								राहुल
गुजरात						जिगर	पाठक	जिगर
बंगलोर / दक्षिण							वंदना	
दिल्ली /देहरादून	आतिशी, अशोक	अंकित, अशोक	अंकित, अनुराग			सुनीता जैन व अंकित	अंकित	
पंजाब								
देवघर								

युवा समिति

- पलक दायमा, श्रुति वानखेडे, सुरम्या पाठक, दृष्टा गोपाला, शेफाली संगल, दर्श चावड़ा

सम्मलेन उद्देश्य:

"मानवीय संस्कृति के अर्थ में विधि के स्थापन के उद्देश्य से किया गया प्रचार, प्रदर्शन, योग्यता अर्जन एवं उत्सव | अर्थात, सम्मेलन शिक्षा, अध्ययन, आचरण के लिए प्रोत्साहन देता है

उपरोक्त उद्देश्य से निम्न तीन धाराएं सम्मेलन में दृष्टि गोचर होते हैं:

1. सूचना प्रसारण एवं आगामी योजना

- योजना के ५ आयाम में देश भर में केंद्र, समूहों के गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी
- आगामी लोकव्यापीकरण योजना पर चर्चा, विचार–विमर्श

2. विचार विमर्श एवं योग्यता अर्जन:

- प्रस्तुतियों द्वारा मंच से व्यक्त होकर नवीन अध्येयताओं के लिए योग्यता अर्जन का अवसर
- नवीन दिशाओं में विचार विमर्श के अवसर

3. मैत्री मिलन, संपर्क के लिए अवसर :

- देश भर के मित्रों से परिचय, एक दुसरे का सम्पर्क, जुडना, उत्साह वर्धन
- विभिन्न योजनों, कार्यक्रमों की जानकारी, जुड़ना (networking), जिम्मेदारी वहन करने का अवसर

जीवन विद्या राष्ट्रिय सम्मेलन के रूप रेखा में निम्न वर्गों को ध्यान में रखना आवश्यक है

1. **'समाज' के लोग** – दर्शन के प्रचार के रूप में
2. **नवीन परिचित साथी** – सुचना तथा उत्साह वर्धन
3. **नवीन अध्येयता** – मंच से योग्यता अर्जन तथा जिम्मेदारी वहन
4. **अध्ययनशील प्रौढ़ मित्र** – मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन देवें

उपरोक्त उद्देश्यों के पूर्ति हेतु सम्मेलन का निम्नलिखित रूप रेखा है : PROGRAM FORMAT

The Program Format consists of the following 10 items. It is based on the collective learnings and feedback since 2011 and has been refined based on past experience, feedback and mistakes. It is designed to balance the expectations and needs of the wide cross- section of people that attend the sammelan. Any modification in this format needs to be done with the consensus of all members in the 8 member sammelan samiti and also after confirmation from -representatives from each center (Amarkantak, Achoti, Hapud, Indore, Kanpur, etc). In this manner, the sammelan format will be representative of past learnings and can caters to a wide audience and avoids being individual centric or according to only one दृष्टी / objective

S.No.	सत्र / विषय वस्तु	समय एवं उपलब्ध सत्र	Total
1	योजना में देश भर में प्रगति/रिपोर्ट 3 व्यष्टि अध्ययन (केस स्टडी)	२० मिनट x १ सत्र २० मिनट x ३ सत्र	1.5 hrs
2	मुख्य विषय वस्तु (main theme)	२ घंटे x २ सत्र	4 hrs
3	उप विषय वस्तु, पैनल चर्चा – जीने से सम्बंधित (secondary theme/ panel discussion)	२ घंटे x 1 सत्र	2 hrs
4	प्रौढ़ अध्येयता वक्तव्य - दर्शन के अध्ययन/ लोकव्यापीकरण से वरिष्ठ मित्र	20 मिनट x 3 सत्र	1 hr
5	बच्चों की प्रस्तुति (8–18 वर्ष) – जो cvms या उसके वातावरण में पढ़ रहे हैं	१ घंटे x 1 सत्र	1 hrs
6	युवा प्रस्तुतियां (18–30 वर्ष) परिचित / अध्ययनशील: जो दर्शन के अनुसार जीवन शैली यापन का सोच रहे हैं / प्रयास में हैं	1.5 घंटे x 1 सत्र	1.5 hrs
7	नवीन पहल (new initiatives): नवीन प्रबोधक प्रस्तुतियां (30 वर्ष से अधिक), अनुवाद, etc.	1.5 घंटे x 1 सत्र	1.5 hrs
8	ग्रामीण मुद्दे / प्रगति	१ घंटे x1 सत्र	1 hr
9	जीवन विद्या लोकव्यापीकरण योजना के लिए सार्थक सुझाव, भागीदारी (coordination team चयन एवं प्रस्तुति)	१ घंटे x 1 सत्र	1 hr
10	सायंकाल गोष्ठी : सामान्य जानकारी, मिलन, networking हेतु	२ घंटे x 2 सत्र	4 hrs
#	उद्घाटन एवं समापन		1.5 hours
		Total in ~ 2.5 days	20 hours

Note:

- Number of Speakers per session: Each session is about 2 hours. Each person needs 20-15 minutes, so a maximum of 6 speakers + 1 chair is recommended. Squeezing in too many speakers does not give enough room for any person to express themselves satisfactorily.
- Choosing the Speakers: Preferably, Speakers are chosen based on प्रतिनिधि विधि) Contact locations and ask them for names) . Otherwise, you can with the session chairs or program managers recommendations.
- Prior Preparation: The program manager / and the session chairs should ensure they communicate the topics well before hand to the speakers and also hold atleast 1 conference call with speakers of each session prior to the sammelan to ensure no duplication and consistent presentations.
- Topics for the various sessions should be closely related to areas of living, current human topics/issues and how we as individuals or as a group are addressing it, the difficulties faced, the plan to overcome it, etc. The "sammelan" is not an "adhyayan" meeting.
- Content of speeches: Speakers need to be advised to avoid textual-theory as much as possible and focus their talk on their personal opinions, experiences and thoughts. This makes the session lively. A pandal/tent with 500people is not conducive for a theoretical speech.

सुझावित दैनिक कार्यक्रम / समय सारणी

(सम्मलेन आयोजक समिति आवश्यकता अनुसार निम्न क्रम को परिवर्तित करें – परन्तु इसमें उपरोक्त 11 सत्रों को कृपया बनाये रखें)

प्रथम दिवस		
समय	**कार्यक्रम**	**विषय**
सुबह ७.३० से 10:00	नाश्ता	
सुबह ९ से १०:30	पंजीकरण	
सुबह १०:30 से 11:00	उदघाटन सत्र	वन्दना गीत (१० मिन) + स्वागत + इस सम्मेलन की रूप–रेखा (१० मिन) + जीवन विद्या योजना फिल्म (१० मिन) (Contact Ankit Pogula, Delhi)
सुबह 11:00 से 11:20	योजना में गतिविधियाँ (सारांश)	**सारे स्थान/केन्द्रों से सारांश रिपोर्ट** (२० मिनट) Any 1 speaker presents the summary of the entire country clubbed under 3 yojanas in 20 mins, based on the written reports received before hand (Kendra progress report format is attached at end of this document).
सुबह 11:20 से 11:40	प्रौढ़ अध्येयता प्रस्तुति #1	
सुबह ११.४५ से १.१५	मुख्य विषय वस्तु पर मंच चर्चा (Main Theme) प्रथम सत्र	See below for topics सम्मेलन मुख्य विषय वस्तु (1 convener + 4 speakers) (Choose any one – कोई एक चुने) 1. **अनुसन्धान/ विकल्प:** मध्यस्थ दर्शन में नए / भिन्न / मार्मिक मुद्दों पर ध्यानाकर्षण 2. **शिक्षा का मानवीयकरण** (विद्यालीन, स्नातक, तथा उच्च शिक्षा में विषयों का परिमार्जन) 3. संसार में **स्वास्थ्य, उत्पादन एवं विनिमय** सुलभता 4. **अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था** का स्वरुप तथा वर्तमान से पहुँचने के चरण ५. **मानव धर्म एक, मानव जाति एक** (मानवीय आचरण सहित) 5. **युद्ध, आतंकवाद एवं संघर्ष मुक्ति:** 6. **न्याय सुलभता एवं अखंड समाज:** प्रचलन एवं प्रस्तावित में अंतर; समस्या– समाधान 7. **सुविधा–संग्रह के स्थान पर समाधान–समृद्धि** , तथा परिवारों में टूटन – समस्या, समाधान

		८. **प्रकृति में पूरकता एवं व्यवस्था:** प्राकृतिक असंतुलन – सम स्या एवं समाधान
दोपहर १.१५ से 3.००	भोजन	
3:00–3:20	व्यष्टि अध्ययन (case study)#1	*Case Study is a live presentation of a) Efforts, b) People c) Success d) Difficulties e) Future Plans **व्यष्टि अध्ययन** (case study): (३ केस, प्रत्येक २० मिनट) presented over 3 days Choose any 3 from following 8 areas: 1. **लोक शिक्षा** (किसी भी केंद्र में /से) a) परिचय शिविर b) अध्ययन शिविर c) अध्ययन / मनन गोष्ठी 2. **शिक्षा का मानवीयकरण** a) चे.वि.मू.शि. विद्यालय – (रायपुर, अछोटी, इंदौर, बुलढाना) b) प्रचलित विद्यालीन शिक्षा (छ.ग., दिल्ली, महाराष्ट्र,) **c)** प्रचलित स्नातक, स्नाकोत्तर (Higher Education) 3. **परिवार व्यवस्था में जीने का प्रयोग**: (उत्पादन/विनिमय/न्याय/स्वास्थ्य) a) **केंद्र/ स्थान:** इंदौर, अछोटी/हिंगना , कानपुर, मानव तीर्थ b) **समूह:** पुणे, यवतमाल, बुलढाना,दिल्ली, बैंगलोर, हैदराबाद, अहमदाबाद, राजकोट
दोपहर 3.२० से ४:.२०	बच्चों द्वारा प्रस्तुति	युवा समिति द्वारा निर्णित: बच्चों की प्रस्तुति (8–18 वर्ष) – जो CVMS या उसके वातावरण में पढ़ रहे हैं: उनके भाव, विचार, उपलब्धि, प्रचलित शिक्षा से तुलना, आगे के लिए योजना, बड़ों से अपेक्षा |
४:२०–५:००	ग्रामीण प्रगति मुद्दे	ग्रामीण क्षेत्रो से आये मित्रों का अनुभव: अपने अध्ययन, ग्राम वि कास, शिक्षा तथा व्यवस्था में प्रयोग, चुनौतियां, प्राप्त सफलता, अन्यों से अपेक्षाएं (1 convener + 3 speakers)
दोपहर ५.०० से	चाय अवकाश	

६.००		
६ ००.से ८ ००.	सायंकाल गोष्ठियां (प्रारंभिक प्रस्तुति एवं प्रश्न–उत्तर, जानकारी सत्र)	१) **अध्ययन शिविर:** सूचना एवं पुस्तकें (जो अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए) २) **अध्ययन, मनन गोष्ठियां** (जो अध्ययन कर रहे हैं, उन के लिए) ३) **स्वावलम्बन के स्रोत:** उत्पादन, सेवा एवं विनिमय: प्रयोग एवं सफलताएं – कृषि, गृह कार्य, तकनीकी कार्य, इत्यादि ४) **युवा सृजन** (२५ से कम आयू वर्ग) (नयी पीढी हेतु): सम्भावना, अध्ययन, मार्गदर्शन ५) **संस्था/विचारधारा पूरकता:** देश–विदेश में अन्य विचार–धाराओं, संस्थाओं के साथ पूरकता पहचान, उसकी विधि Choose 5 coordinators for the same. They will follow up with the attendees after the sammelan)
रात्रि ८. ०० से ९.३०	भोजन	

प्रौढ़ अध्येयता वक्तव्य :प्रत्येक दिवस एक या दो वरिष्ठ अध्ययनरत व्यक्ति का प्रस्तुति रहे (20 मिनट) – निम्न में से किसी भी ३ वस्तुओं पर तीन साथियों का प्रस्तुति रहे

1. मध्यस्थ दर्शन का इतिहास, स्वरुप, तात्पर्य, मार्मिकता
2. प्रचलित शिक्षा में दर्शन प्रवेश हेतु सम्भावना एवं दिशा : विद्यालीन एवं उच्च शिक्षा में
3. "अध्ययन" की आवश्यकता, स्वरूप, अध्ययन के साथ 'जीने में अभ्यास का महत्व (भौतिकवाद एकं आदर्शवाद से भिन्न)
4. आज के समाज के साथ कैसे जुड़ना है – समाज में सुधार के कड़ियाँ : संविधान, संस्कृति, सभ्यता इत्यादी
5. सह–अस्तित्ववादी विज्ञान और प्रचलित विज्ञान: समन्वयन

६. प्रचलित शिक्षा में इतिहास, भूगोल, दर्शन–शास्त्र, इत्यादी में मध्यस्थ दर्शन का समावेश

द्वितीय दिवस		
सुबह ७. ३० से ८.४५	नाश्ता	
सुबह ९.०० से ११.००	मुख्य वस्तु (Main Theme) पर मंच चर्चा **द्वितीय सत्र**	सम्मेलन मुख्य विषय वस्तु (जारी) (1 convener + 6 speakers) अथवा parallel sessions
११:००–११:३०	चाय अवकाश	
सुबह ११.३० से १२.30	युवा अध्येयताओं द्वारा प्रस्तुति (१८ से ३० वर्ष)	अपने व्यक्तिगत अध्ययन, स्थिति को बताएं | दर्शन से संभावना, अध्ययन कैसे कर रहे हैं, उसमे कठिनाई, प्राप्त स्पष्टता, गुणात्मक, परिवर्तन, आगामी योजना, सुझाव 1 convener, ४ speakers – 15 minutes/speaker
दोपहर १२:३० से १:००	प्रौढ़ अध्येयता प्रस्तुति #2	
दोपहर १.०० से ३.००	भोजन	
३:०० – ३:२०	व्यष्टि अध्ययन (case study #2)	
दोपहर 3:30 से ४:३०	नवीन पहल	नवीन प्रबोधन, प्रकाशित शोध पत्र/लेख, भाषा अनुवाद, सफल स्वावलम्बन, विनिमय व्यवस्था, **प्रचार** (कुल ५ वक्ता, १० मिनट प्रति)
दोपहर ४:३० से ६.००	चाय अवकाश, पोस्टर प्रेजेंटेशन	
६.०० से ८.००	**सायंकाल गोष्ठियां** (प्रारंभिक प्रस्तुति एवं प्रश्न–उत्तर, जानकारी सत्र)	१) **चे.वि.मू.शि. विद्यालय** (कक्षा १ से १०) में प्रयोग (रायपुर, इंदौर, बुलढाना आदि में), पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें. अध्यापन २) **प्रचलित विद्यालीन शिक्षा में समावेश:** (छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, दिल्ली में), उनकी स्थिति, संभावनाएँ व भावी योजना ३) **उच्च शिक्षा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा:** द्वारा सार्वभौमिक मानव मूल्यों का समावेश ४) **नए प्रबोधक समन्वयन** (जो लोक शिक्षा में व्यक्त होना

		चाहते हैं) ५) **परिवार समूह व्यवस्था में जीना** ((इंदौर, हिंगना–अछोटी) में प्रयास, सफलता, कठिनाईयां, समाधान
रात्रि ८ .०० से ९.३०	भोजन	
९:३० से १०:३०	अगले सम्मेलन निश्चयन हेतु बैठक	
तृतीय दिवस		
सुबह ७. ३० से ८.४५	नाश्ता	
सुबह ९.०० से ११.००	सम्मलेन secondary theme (पैनल चर्चा एवं प्रस्तुति)	Choose any 1, 2 or more if you can have parallel sessions: This can be a **panel discussion,** not just prepared speeches) 1. **अध्ययन के साथ 'जीने के अभ्यास' का महत्व:** सह–अस्तित्ववाद में 'जीने' का तात्पर्य, भौतिकवाद, आदर्शवाद से भिन्नता, संभावनाएं, कौनसे आयाम यथावत रहते हैं, कौनसे बदलते हैं 2. **स्वावलम्बन**: अवधारणा, साकार करने की सम्भावना, बाधाएं एवं समाधान : उत्पादन एवं विनिमय प्रयास एवं अनुभव 3. **परिवार में न्याय:** संबंध निर्वाह, परिवार व्यवस्था में जीना : व्यवहार, सम्बन्ध, संपर्क, विहार में अंतर, मित्र सम्बन्ध 4. **सार्वभौम सामाजिक नियम** – आवश्यकता, अनिवार्यता, में जीने का तात्पर्य 5. **नर नारी में समानता**: व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में समानता का तात्पर्य, उसकी जमीनी वास्तविकताएं तथा समाधान | 6. **व्यवस्था संबंध** – जीने में a) लोकव्यापीकरण योजना, b) निजी अध्ययन, c) पारिवारिक जीवन (ग्रहस्ती) d)आर्थिक

		आवश्यकताओं में संतुलन कैसे पाएं?: विचार विमर्श | साथी सहयोगी सम्बन्ध का तात्पर्य, आज की मान्यता 7. वर्तमान परिस्थिति में **प्राकृतिक अपराध मुक्त** जीने की संभावना, स्वरुप: एवं तात्कालीन परिस्थिति में प्रकृति संरक्ष्ण, संवर्धन की संभावनाएं
सुबह 11:00 से 11:20	प्रौढ़ अध्येयता वक्तव्य #3	
11:20–11:40	व्यष्टि अध्ययन (case study #3)	
सुबह 11:40 से 12:40	जीवन विद्या लोकव्यापीकरण योजना के लिए सार्थक सुझाव ,, भागीदारी	स्वयं के अध्ययन, तथा लोक शिक्षा, शिक्षा संस्कार, केन्द्रों के विभिन्न कार्यक्रमों में समनवयन हेतु गोष्ठियों का स्वरूप, रिपोर्ट, भावी योजना, एवं प्राप्त लिखित सुझावों पर चर्चा : (coordination team चयन एवं प्रस्तुति)
12:40–1:00	Buffer	
दोपहर १:०० से २:००	समापन सत्र	१) इस सम्मेलन की उपलब्धि (१५ मिनट) २) २–३ नवीन प्रतिभागियों द्वारा अथवा युवकों द्वारा सम्मेलन पर प्रतिपुष्टि (५–५ मिनट में फीडबैक) (२० मिनट) ३) सम्मेलन में पधारे वरिष्ठ लोगों का पहचान कराना (५ मिनट) ४) अगले सम्मेलन स्थल को handover (५ मिनट) ५) सम्मेलन करता (organizers) thanks तथा उनके साथियों का पहचान कराना (१५ मिनट) ६) प्रतिभागियों द्वारा धन्यवादार्पण (५ मिनट)
दोपहर २.०० से ३.३०	भोजन	
दोपहर ४.०० से ६.३०	स्थानीय गणमान्य जनों के साथ गोष्ठी	

सत्रों हेतु मार्गदर्शन / सुझाव

मंच चर्चा : मुख्य वस्तु तथा उप वस्तु (Main Theme & Sub Theme)

मुख्य विषय (Main Theme) वस्तु पर दो ही सत्र रहे, अन्यथा चर्चा दोहराने लगता है (becomes repititive) –> 1 session can be a parallel session if the venue has facilities.

उप वस्तु (Secondary Theme) पर एक ही सत्र रहें – ideally as a panel discussion or as parallel sessions

*** प्रत्येक मंच चर्चा के मुख्य भाग:**

- १) समस्या की समीक्षा एवं कारण २) समाधान वस्तु ३) पूर्ती हेतु योजना एवं इसे हम स्वयं कैसे क्रियान्वित कर रहे हैं)

अध्यक्ष:

- प्रत्येक सत्र के अध्यक्ष (convener) अध्ययन, अभ्यास एवं योजना में अनुभवी लोग रहें, जो अपने सत्र में वक्ताओं के नामांकन में अपना सहमती देवें |
- सत्र के अध्यक्षों की जवाबदारी है कि मंच चर्चा मे वक्ताओं की प्रस्तुति में मार्गदर्शन दें तथा उनके योग्यता बढ़ाने में सहायक रहे | नए लोगों को बोलने के लिए अधिक से अधिक अवसर रहें, "अध्यक्षों" का बोलना सत्र के सारांश मात्र के रूप में सुझावित है |
- प्रत्येक मंच सत्र के चर्चा – वस्तुओं को उस सत्र के अध्यक्ष स्वयं तय करें

वक्ता:

- वक्ताओं में नर – नारियों में समानता रहे, नवीन लोगों को अवसर दें
- प्रत्येक चर्चा में ऐसे व्यक्ति शामिल रहें, जो स्वयं जीने में प्रवृत्त हों, अभ्यास में हों
- सिद्धांत (Theory) कम, एवं इसे स्वयं से जोड़कर हम जीने में कैसे देखते हैं, अथवा प्रयोगरत है, यह आना चाहिए | सम्मेलन में समझाना नहीं हो सकता | मात्र अपना मत रख सकते हैं |
- इस प्रकार से वक्तव्य में व्यक्तिगत भाग अधिक (personal touch) आना चाहिए |

योजना में गतिविधियाँ – उद्देश्य: प्रगति रिपोर्ट, जानकारी, परस्पर उत्साह वर्धन

योजना में गतिविधियों को केन्द्रों के अनुसार न रखकर 'योजना के आयाम' के अनुसार रखें | इसका कारण हैं की संख्या अधिक हो गया है, तथा ज्यादा सत्र होने से प्रस्तुति बिखर जाता है|

प्रस्तुतित्यों को पूर्व में ही एक निश्चित रूप–रेखा (format) में मंगा लिया जाये (संलग्न है) | यथा संभव इसका एक प्रिंट आउट प्रतिभागियों में बाँट सकते हैं

मंच से प्रस्तुतुयों में यथा संभव प्रोजेक्टर के माध्यम से चित्र (audio, video, visual) का अधिक प्रयोग रहे

योजना में गितिविधि की प्रस्तुतियां निम्न आयामों में रहे: जो स्थान/व्यक्ति इसमें प्रयासरत हैं, वे आकर अपनी बात रख सकते हैं | इन्हें संकलन कर प्रस्तुत किया जा सकता है (Compilation)

- लोक शिक्षा योजना: परिचय शिविर, अध्ययन शिविर, गोष्ठी एवं प्रचार (अनुवाद, इत्यादी)
- शिक्षा का मानवीयकरण: अभिभावक विद्यालय, चेतना विकास मूल्य शिक्षा: (स्कूली तथा उच्च), विश्वविद्यालय
- परिवार मुल्क स्वराज्य व्यवस्था: अनेक परिवार जो साथ में मिलकर प्रयासरत हैं, नए स्थान/ केंद्र

गोष्ठियां : उद्देश्य: सुचना प्राप्ति एवं सम्पर्क, योजना से जुड़ना (networking)

प्रत्येक गोष्ठी का एक समन्वयक रहे | गोष्ठियों में माइक की व्यवस्था करें

गोष्ठी का उद्देश्य जानकर व्यक्तियों से संपर्क साधना, जानकारी प्राप्त करना, छोटे समूह में प्रश्न–उत्तर करना, दिशा प्राप्त करना है

सूचना प्रसारण | Information Dissemination (**to be ensured by Program manager /** कार्यक्रम प्रबंधक)

Announcements

1. Announce the date > 4 months prior by sms and email and remind for ticket booking
2. Once the sammelan program has been finalized by both committee (sammelan & margdarshan) circulate it & ask for suggestions:
    a . Create web-page/site and send sms & on whats app groups
    b . Share speakers list 30 days prior via website, sms and whats app

Registration

1. Get web-team to create online registration
2. Circulate the form via sms, also give phone number for registrations (to be sent only to regional coordinators if not open invitation)
3. Close registrations 15 days prior
4. Send sms of how to reach, what to bring to registered participants only
5. Also send sms for volunteers if needed

Film/Presentation

- Create 1 yr progress report film/Presentation

Reporting

- **Youtube Video :** If recording the sammelan, upload good sessions only to youtube (to avoid cluttering)
- Provide a small 4 page report with few pictures for site upload

Contacts:

- For web-page and online forms: Shriram and Ashok (Web team)
- For sms: Gowri Srihari (each sms is automatically converted to an email and shows on the google calendar)
- For whats app: various
- For Film and Youtube: Ankit Pogula, Delhi.

जीवन विद्या राष्ट्रीय सम्मेलन की तिथियाँ

क्र	**वर्ष**	**स्थान**	**तिथि**
1	1994	बिजनोर (उ.प्र.)	अक्टूबर
2	1996	नागौद (उ.प्र.)	२१–२३ दिसम्बर
3	1997	नंदिनी (छ.ग.)	२०–२३ सितम्बर
4	1998	झाभुआ (म.प्र.)	२५–२७ दिसम्बर
5	1999	आंव्री (छ.ग.)	२२–२४ अक्टूबर (+ अनुभव शिविर)
6	2000	बिजनोर (उ.प्र.)	अक्टूबर
7	2001	बिहीटा (उ.प्र.)	५–७ अक्टूबर
8	2002	अछोटी (छ.ग.)	अक्टूबर
9	2003	अमरकंटक (म.प्र.)	१०–१३ अक्टूबर
10	2004	भोपाल (म.प्र.)	१–३ अक्टूबर
11	2005	मसूरी (उत्तराखंड)	२१–२३ अक्टूबर
12	2006	कानपुर (उ.प्र.)	२६–२९ अक्टूबर
13	2008	चकारसी (उ.प्र.)	अक्टूबर
14	2009	हैदराबाद (आंध्र.प्र.)	१–४ अक्टूबर
15	2010	बांदा (उ.प्र.)	१३–१५ नवम्बर
16	2011	इंदौर (म.प्र.)	११–१३ नवम्बर
17	2012	अछोटी (छ.ग.)	१६–१९ नवम्बर
18	2013	बिजनोर (उ.प्र.)	१७–२० अक्टूबर
19	2014	अमरकंटक (म.प्र.)	१७–१९ अक्टूबर
20	2015	बुलढाना (माह)	24–26 सितम्बर
21	2016	सरदारशहर (राज.)	१२–१६ नवम्बर
22	2017	वाराणसी	८–१० दिसम्बर
23	2018	गुजरात	15–17 नवम्बर
24	2019	अमरकंटक	१८–२० ओक्टोबर

participant feedback and organizers learnings (to be updated after every sammelan) प्रतिभागियों द्वारा सुझाव तथा आयोजन कर्ताओं से टिप्पणियां

feedback & organizers learnings.(

forms (double click icon to open file)

kendra Prastuti Formats.docx	aamantran patra-invitation.docx	registration form.docx	feedback form.docx	self evaluation - mulyankan.docx

* Feedback form is useful. Self-evaluation form has been recommended by Babaji

previous sammelan agenda (double click icon to open file)

२०१५ बुल्धाना .doc	२०१४ अमरकंटक .xlsx	२०१३ बिजनोर .xlsx	२०१२ अचोटी - sanchalak copy.docx	2018 Varanasi.docx		

document version history

Date	Comments	Name
nov 2012	created document based on collective inputs	shriram
dec 2013	updated goshti list after achoti sammelan	shriram
oct 2014	added pratinidhi model for samiti after amarkantak sammelan	shriram
april 2016	added samiti list after buldhana sammelan	mahesh kolte
april 2016	attached all forms – see page 11	shriram
june 2016	Suggestions for Sardarshar sammelan: yuva samiti and बच्चे प्रस्तुति	Himansu D
Dec 2016	Rajasthan Sammelan: removed kendra prastuti, added case studies & report	shriram
Feb 2018	Modified slightly based on Varanasi Sammelan: added poster presentation	shriram
May 2019	Updated after Gujarat Sammelan - added parallel sessions & ग्रामीण मुद्दे	shriram

सुझाव: jvsammelan@gmail.com / *99077-94154*